

For- CTET

हिंदी शिक्षण शास्त्र

(Hindi Pedagoggy.)

By - Baldev Sir
no- 9458415464

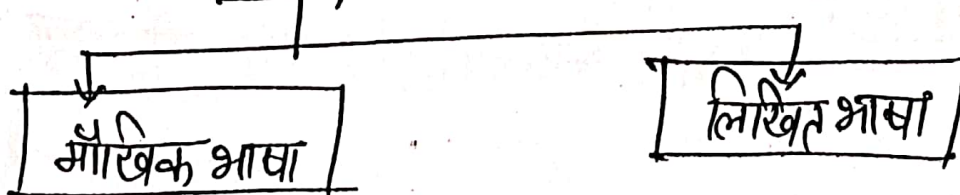
विधान

- ① भाषा
- ② बहुभाषिकता
- ③ भाषा शिक्षा के उद्देश्य
- ④ भाषा का विकास
- ⑤ भाषा शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ
- ⑥ वर्तनी शिक्षण
- ⑦ व्याकरण शिक्षण और प्रकार
- ⑧ व्याकरण शिक्षण और उसके प्रकार

भाषा (Language)

- ⊗ भाषा ध्वनियों शब्दों आदि का समूह है।
- ⊗ भाषा की कक्षा से यह महत्वपूर्ण है भाषा की प्रत्यक्ष भूमि पर किसी को पीढ़े न छोड़ा जाय।

भाषा दो प्रकार की होती है-



भाषा

औपचारिक भाषा

- ⊗ विद्यालय में प्रयोग होने वाली भाषा
- ⊗ जो क्षेत्र के पढ़ लिख समाज द्वारा स्वीकृत भाषा

अनऔपचारिक भाषा

- ⊗ घर-परिवार की भाषा
- ⊗ माता-पिता की भाषा
- ⊗ परिवेश की भाषा
- ⊗ जन संचार माध्यम की भाषा
- ⊗ समाज की भाषा
- ⊗ पड़ोस की भाषा

⊗ इसके अतिरिक्त भाषा के प्रकार:-

① राष्ट्रभाषा :- किसी देश के अधिकतर लोगों की भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है।
भारत के अधिकतर लोग हिंदी बोलते और समझते हैं अतः हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है।

→ उपनाम - ⊗ लोक भाषा
⊗ National Language
⊗ Lingua Franca (लिंग्वा फ्रान्का)

② राजभाषा :- अर्थ → "सरकारी कामकाज की भाषा"

Note * भारत में हिंदी को संविधान की धारा-343(1) अध्याय-14 भाग-12 के अनुसार राजभाषा घोषित किया जा चुका है जिसके अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।

* भारत की संविधान निर्माता सभा ने 14 Sep 1949 को निर्णय लिया कि हिंदी भारत संघ की राजभाषा होगी।
और तभी से प्रत्येक वर्ष 14 Sep को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

जिस प्रदेश की राज्य सरकार द्वारा उस राज्य के अन्तर्गत प्रशासनिक कार्यों के सम्पन्न करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है।
9458415464, 9759481102

मातृभाषा :- माता की भाषा/बोली, घर की बोली तथा समाज द्वारा प्रचलित भाषा को मातृभाषा कहते हैं।

→ महत्वपूर्ण तथ्य :- * औपचारिक शिक्षा में मातृभाषा का तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष की भाषा से होता है, जिसके माध्यम से उस क्षेत्र का पढ़ा लिखा समाज विचार विनिमय करता है।

- * प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।
- * मातृभाषा में ही बच्चों का मस्तिष्क में सबसे पहले क्रियाशील होता है।
- * मातृभाषा बच्चों के ज्ञान के विकास में सहायक है।
- * मातृभाषा विचार विनिमय और शिक्षा ग्रहण करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

⇒ हिन्दी भाषी राज्य - ॥

- ⊗ हिमाचल प्रदेश
- ⊗ उत्तर प्रदेश
- ⊗ मध्य प्रदेश
- ⊗ उत्तराखण्ड
- ⊗ झारखण्ड
- ⊗ बिहार
- ⊗ हरियाणा
- ⊗ राजस्थान
- ⊗ छत्तीसगढ़
- ⊗ दिल्ली
- ⊗ अण्डमान निकोबार

⇒ भाषा से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य :-

Important fact

- ⊗ भाषा का आगोजन अनुकरण के माध्यम से होता है।
- ⊗ प्रत्येक भाषा की भौगोलिक सीमा होती है।
- ⊗ भाषा का प्रभाव जटिलता से सरलता की ओर
- ⊗ भाषा सम्प्रेषण का सर्वप्रथम माध्यम है।
- ⊗ भाषा सर्व व्यापक सभी जगह है।
- ⊗ भाषा एक प्रकार से स्मृतिकोष/शब्दकोष का भी काम करती है।
- ⊗ भाषा सामाजिक सांस्कृतिक रूप से बनती है।
- ⊗ संयुक्त परिवार में बच्चा का भाषा विकास अच्छा होता है।
- ⊗ भाषा अर्जित सम्पत्ति है।
- ⊗ भाषा पृथक सम्पत्ति नहीं है।
- ⊗ भाषा निमग्न बंद व्यवस्था है।

- ⊗ भाषा सामाजिक वस्तु है।
- ⊗ भाषा जीवन की विभिन्न स्थितियों की सम्पत्ति है।
- ⊗ भाषा अध्यापन में मुख्य एवं उच्चारण की स्पष्टता है।
- ⊗ भाषा को सीखने के लिए भाषा वातावरण होना आवश्यक है।
- ⊗ भाषा सोचने, महसूस करने, और चीजों से जोड़ने का उत्तम साधन है।
- ⊗ बच्चे विद्यालय शिक्षा की शुरुआत से पहले ही भाषा की जाहिलगी और नियमों की आत्मसत्ता का पूर्ण भाषिक क्षमता रखते हैं।
- ⊗ भाषा सीखने में भाषा प्रयोग ही सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा होती है जो समग्र के माध्यम से शुरू होने लगती है।
- ⊗ भाषा भाषिक में समरूपी होती है वह प्रयोग से शुरू होती है विषम रूप में जाती है।
- ⊗ भाषा के विविध प्रयोग से ही भाषा की विविध क्षमताएं आती हैं।

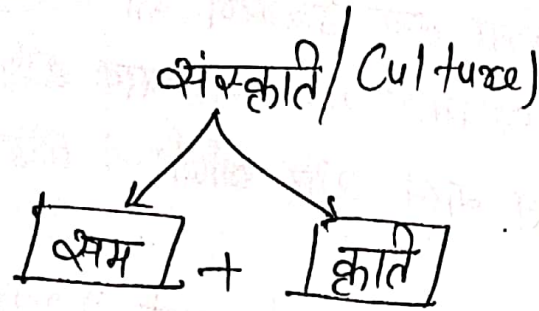
9458415464 , 9759481102

भाषा शिक्षक के कार्य :-

- ⊗ भाषा शिक्षण में अनिवार्य है - समग्रवादी दृष्टिकोण
- ⊗ भाषा शिक्षक को बच्चों को भाषा के विविध स्वरूप और प्रयोग से परिचय कराना चाहिए।
- ⊗ शिक्षक की स्वयं की भाषा प्रयोग की कुशलता बच्चों की भाषा प्रयोग के लिए आदर्श रूप में प्रस्तुत करती है।
- ⊗ शिक्षक को भाषण पढ़ते समय या पढ़ाते समय सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- ⊗ भाषा शिक्षकों को कक्षा और कक्षा से बाहर बच्चों को भाषा प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अध्याय-2.

बहुभाषिकता / बहुसंस्कृति



अर्थात् :- अच्छी तरह से सोच समझ कर किया गया कार्य।

Note. किसी भी समाज की संस्कृति से अर्थ है कि उस समाज के सम्पूर्ण जीवन पद्धति/संस्थाएँ हैं। — A.K. सिंघ (परिस्थिति)

⊗ संस्कृति को दो भागों में विभाजित किया जाता है—

→ ① भौतिक संस्कृति :-

मानव द्वारा निर्मित समस्त वस्तुएं वस्तु मशीन औजार आदि।

→ रहन-सहन, खान-पान, कला कौशल, भाषा, धर्म दर्शन आदि।

→ अभौतिक संस्कृति :-

संस्कृति की प्रकृति एवं विशेषताएँ :-

- ⊗ संस्कृति मनुष्य के व्यक्तित्व का निमिष करती है।
- ⊗ बच्चे प्रारम्भ से ही बहुभाषी होते हैं।
- ⊗ विद्यालय बहुभाषिकता एवं राष्ट्रीय सदभावना का प्रचार करता है।
- ⊗ सभी विषयों की कक्षा भाषा की कक्षा होती है।
- ⊗ बहुभाषिकता बच्चे की अस्मिता का निमिष करती है।
- ⊗ बहुभाषिकता सांस्कृतिक विकास का समायोजक है।
- ⊗ भिन्न-भिन्न भाषिक पृष्ठभूमि से आये बच्चों को कक्षा में स्वीकार करना चाहिए।
- ⊗ बहुभाषिकता भाषा की समृद्धि को बढ़ावा देती है किन्तु बच्चा स्वीकार है 9468415464, 9739481102
- ⊗ भाषिक की पृष्ठभूमि के आधार पर किली को ध्यान देना चाहिए।
- ⊗ बहुभाषी कक्षा को एक संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जाए।
- ⊗ लोकगीतों की भाषा की कक्षा में स्थान दिया जाना चाहिए। क्योंकि इससे बच्चे सांस्कृतिक विशेषताओं से परिचित होते हैं।

अध्यास-3. भाषा शिक्षा के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर

- ① → ज्ञानात्मक उद्देश्य
- ② → कौशलात्मक उद्देश्य
- ③ → अभिवृत्तक उद्देश्य

उच्च प्राथमिक स्तर

- ① → ज्ञानात्मक उद्देश्य
- ② → कौशलात्मक उद्देश्य
- ③ → सर्जनात्मक उद्देश्य
- ④ → अभिवृत्तक उद्देश्य

★ ज्ञानात्मक उद्देश्य :-

- ① भाषा के तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना :-

(क) ध्वनि → उच्चारण, लेखन

(ख) शब्द → शब्दभेद, शब्द रचना, शब्द अंश

(ग) वाक्य रचना → पदबंध, वाक्य रचना

- ② वैचारिक विषयवस्तु का ज्ञान प्राप्त करना :-

मौखिक रचना के विविध रूप, सामान्य ज्ञान, जीवन अनुश्रुतियाँ, सांस्कृतिक मूल्य, पौराणिक साहित्य।

- ③ रचना के विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करना :-

(क) मौखिक रचना के विविध रूप -

संवाद, वर्णन करना, कहानी कहना, भाषण, वाद विवाद, वाल्मीकि, पद्यरचना, अस्वर वाचन, अस्वर कविता पाठ।

(ख) लिखित रचना के विविध रूप:-

वर्णन, कहानी, संवाद पत्र, जीवनी

(2) कौशलालम्बक उद्देश्य:-

अ ① बोध सहित सुचने की योग्यता प्राप्त करना:-

वार्तालाप, आदेश-निर्देश, कथन, वर्णन, आशय,
वाद-विवाद, कविता पाठ, संस्वर वाचन

अ ② प्रभावी ढंग से लिखकर अपनी बात कहने की योग्यता प्राप्त करना:-

वार्तालाप, आदेश-निर्देश, वर्णन, कथन, आशय, वाद-विवाद
कविता पाठ।

ग ③ बोध सहित पढ़ने की योग्यता प्राप्त करना:-

9458415464 9759481102
संवाद, पदबंध, व्याख्या, अनुच्छेद, रचना, वर्णन, वाद-विवाद
कहानी, नाटक, कविता, जीवनी, आत्मकथा

घ ④ प्रभावी ढंग से लिखकर अपनी बात कहने की योग्यता प्राप्त करना:-

वर्णन, शब्दों, अनुच्छेद, रचना, पत्र, आवेदन पत्र, संवाद,
निबंध, कहानी, आत्मकथा

(3) अभिव्यक्त्यात्मक उद्देश्य:-

(i) मात्र भाषा तथा उसके साहित्य में रुचि लेना:-

भाषा, रूप, प्रयोग, क्षेत्र और शैली, साहित्यिक, शैली और
इतिहास

(ii) सद्व्यक्तियों का विकास करना:-

आस्था (विश्वास) प्रेम, श्रद्धा, संवेदनशीलता, सहृदयता

क सर्जनात्मक उद्देश्य:- भाषा कौशल में मौलिकता लाने की योग्यता प्राप्त

⇒ भाषा के तत्वों के आधार पर अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन

- ⊗ विद्यार्थी तत्व की पहचान कर सकेगा।
- ⊗ वह उसका वर्गीकरण कर सकेगा।
- ⊗ वह उसका संश्लेषण कर सकेगा।
- ⊗ वह उनका विश्लेषण कर सकेगा।
- ⊗ वह उसमें परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर सकेगा।
- ⊗ वह उसमें परस्पर अंतर कर सकेगा।
- ⊗ वह विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की तुलना कर सकेगा।
- ⊗ वह उपयुक्त उदाहरण दे सकेगा।
- ⊗ वह उनमें से अशुद्धियों की पहचान कर सकेगा।
- ⊗ वह भाषा के तत्वों के भेद लक्ष्यों की ध्यान में ला सकेगा।

⇒ बोध सहित सुनने की योग्यता के आधार पर अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन :-

- ⊗ विद्यार्थी धैर्य पूर्वक सुनेगा।
- ⊗ वह सुनने के शिष्टाचार का पालन करेगा।
- ⊗ मातृभाषा की ध्वनियों में विभेद कर सकेगा।
- ⊗ वह सुनी हुई सामग्री का विषय जान सकेगा।
- ⊗ वह सुनकर महत्वपूर्ण तथ्यों, विचारों और भावों को समझ सकेगा।
- ⊗ वह स्वर के उतार-चढ़ाव का परस्पर संबंध समझ सकेगा।
- ⊗ वह सुनी हुई बात के केंद्रीय भाव या विचार को समझ सकेगा।
- ⊗ वह स्वर से उतार-चढ़ाव, बल तथा स्वरघात के अनुसार कथन के अर्थ समझ सकेगा।

- ⊗ वह शुनी हुई आत्मगती का स्वर गृहण कर सकेगा।
- ⊗ वह कहानी, कविता, संवाद आदि सुनकर उनका आनन्द ले सकेगा।
- ⊗ वक्ता के मनोभाव (दर्प, क्रोध, आश्चर्य, घृणा, करुणा आदि) को समझ सकेगा।
- ⊗ वह औपचारिक तथा अनौपचारिक कथन में श्रेष्ठ कर सकेगा।

⇒ प्रभावी ढंग से बोलकर अपनी बात कहने के आधार पर

अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन:-

- ⊗ विद्यार्थी श्रेष्ठ स्वर में बोल सकेगा।
- ⊗ वह शुद्ध उच्चारण, उचित बालाघाट और अनुस्वार के साथ बोल सकेगा।
- ⊗ वह स्वर्ण के अनुसार उचित गाने तथा मुद्रा के साथ बोल सकेगा।
- ⊗ वह उचित विराम के साथ बोल सकेगा।
- ⊗ वह स्वर्ण के अनुसार उचित मुद्राओं और लोकोक्तिों का बोलने में प्रयोग कर सकेगा।
- ⊗ वह व्याकरण की दृष्टि से बोलने में सही भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
- ⊗ वह बोलते समय अर्थ के अनुसार शब्दों, पदबंधों और वाक्यों का क्रम निर्धारण कर सके।
- ⊗ वह विभिन्न प्रकार के वाक्यों का सही प्रयोग कर सकेगा।
- ⊗ वह निजी भावों और विचारों को स्पष्ट, सरल और प्रभावपूर्ण ढंग से बोलकर अभिव्यक्त कर सकेगा।
- ⊗ वह बोलते समय विषय की सम्बद्धता, अनुसंबद्धता और एकता को बनाए रखेगा।
- ⊗ वह प्रसंग तथा विषयवस्तु के अनुसार बोलने में विविध शैलियों का प्रयोग कर सकेगा।

⇒ बोध सहित पढ़ने की प्राग्यता के आधार पर अपेक्षित

व्यवहार परिवर्तन :-

- ⊗ विद्यार्थी धीरे धीरे और प्रकाशचिन्त होकर पढ़ सकेगा।
- ⊗ वह शुद्ध उच्चारण तथा उचित बलाघात और अनुतान के साथ पढ़ सकेगा।
- ⊗ वह विराम चिह्नों के साथ पढ़ सकेगा।
- ⊗ वह प्रसंग और सामग्री के अनुकूल गति के साथ पढ़ सकेगा।
- ⊗ वह सामग्री में निहित भावों और विचारों के अनुसार पढ़ सकेगा।
- ⊗ वह पढ़ कर शब्दों, मुद्रावरों और लोकोक्तिओं को उचित सन्दर्भ में समझ सकेगा।
- ⊗ वह पढ़कर मुख्य तथ्य और विचारों को समझ सकेगा।
- ⊗ वह उनमें परस्पर सम्बन्ध समझ सकेगा।
- ⊗ वह पठित सामग्री में केन्द्रीय विचार और सार को समझ सकेगा।
- ⊗ वह पठित सामग्री को परस्पर तुलना कर सकेगा।
- ⊗ वह पठित तथ्यों, विचारों और भावनाओं का मूल्यांकन कर सकेगा।
- ⊗ वह भावों, विचारों और तथ्यों को पढ़कर उनके परस्पर सम्बन्ध को समझ सकेगा।

⇒ प्रभावी ढंग से लिखकर अपनी बात कहने की प्राग्यता के आधार पर अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन :-

- ⊗ विद्यार्थी सुलेख के पांच तत्वों - स्वच्छता, स्पष्टता, वनावट, शिरोरेखा तथा गति को ध्यान में रखकर लिख सकेगा।
- ⊗ वह सही वर्तनी का प्रयोग करते हुए शब्द लिख सकेगा।
- ⊗ वह लिखते समय विराम चिह्नों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
- ⊗ वह लेखन कार्य को अनुच्छेदों में बाँटकर लिख सकेगा।

- ⊗ वह लिखते समय व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
- ⊗ वह लेखन में 'सन्दर्भ' के अनुसार शब्दों, मुद्रावर्णों और लोकोक्तिों का प्रयोग कर सकेगा।
- ⊗ वह लिखते समय वाक्य में शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।
- ⊗ वह प्रसंगानुकूल सामग्री का प्रस्तुतीकरण लिखित रूप में कर सकेगा।
- ⊗ वह लिखते समय विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन कर सकेगा।
- ⊗ वह लिखित अभिव्यक्ति में समबद्धता और स्वतंत्रता बनाए रखेगा।
- ⊗ वह लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों के माध्यम से आवागमन कर सकेगा।
- ⊗ लेखन की अपनी शक्ति विकसित कर सकेगा।

Aruna Nagar Etah

9458415464, 9759481102

⇒ महत्वपूर्ण तथ्य :-

- ⊗ छात्रों में स्तुजनालक शक्ति का विकास करना।
- ⊗ भवानुकूल भाषा का प्रयोग, स्वर निर्माण, अंग संचालन का अभ्यास करना।
- ⊗ छात्रों में शुद्ध, सरल, स्पष्ट ढंग से आत्मअभिव्यक्ति की योग्यता उत्पन्न करना।
- ⊗ स्वभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता कोशल और सोच को विकसित करना।
- ⊗ इसरी की बातों को धीरे से सुनना और सुनी गई बात पर टिप्पणी करना।
- ⊗ प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का उद्देश्य है कि बच्चे विभिन्न स्थितियों में भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकें।
- ⊗ उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का उद्देश्य है कि भाषा की बारीकी और सौंदर्यबोध को समझने की क्षमता का विकास करना।

चोम्सकी, वाइगोत्सकी, पिमाजे

जैम

✱ चोम्सकी के अनुसार :-

- ✱ चोम्सकी भाषा को जन्मजात मानते हैं अर्थात् बच्चे भाषा सीखने की क्षमता के साथ पैदा होते हैं।
- ✱ भाषा अनेक विधाओं से सीखने की कला है।
- ✱ भाषा मस्तिष्क का विकास है।
- ✱ व्यावहारिक या अनौपचारिक व्यापकरण का विकास चोम्सकी ने किया है।
(Functional Grammar)

✱ वाइगोत्सकी के अनुसार -

- ✱ वाइगोत्सकी भाषा के सामाजिक अर्थित सामाजिक अंतः क्रिया स्वरूप पर बल देते हैं।
- ✱ अंतः क्रियाएँ (अंतः वाक्य) भाषा का विकास करती हैं।
- ✱ भाषा एवं चिन्तन एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप से विकसित होते हैं।

✱ जीन पिमाजे के अनुसार -

- ✱ पिमाजे बच्चों के शारीरिक विकास के साथ भाषा के विकास की बात करते हैं।
- ✱ भाषा अनुकरण के माध्यम से सीखी जाती है।
- ✱ B-F स्किनर :- बच्चा अवलोकन के द्वारा सीखता है।

⊗ प्रत्यक्ष विधि (सम्भाषण, प्राकृतिक)

- ⊗ इसके द्वारा बिना मातृभाषा का प्रयोग किए हुए सीधे, एक नई भाषा की शिक्षा दी जाती है।
- ⊗ इस पद्धति में भाषा की पहली बातलाप का आरंभ होती है।

⊗ अनुवाद व्याकरण विधि (वशेष विधि) -

- ⊗ विद्यार्थियों को व्याकरण के नियम पहले ही सिखाए जाते हैं। यह मान लिया जाता है कि सीखने वाले को अपनी मातृभाषा पर अधिकार है और वह उसी की सहायता से दूसरी भाषा सीख सकता है।

9458415464, 9759481102

⊗ शब्द परिवर्तन विधि (आदेश विधि) -

- एक वाक्य के एक या अधिक शब्दों का परिवर्तन करके उन सब वाक्यों के अन्वय द्वारा भाषा की आदतें बनाने का काम को शब्द परिवर्तन कहा जाता है।

⊗ द्विभाषिक विधि:-

- ⊗ नई भाषा सीखते समय अध्यापन - अध्यापन पद्धति में दो भाषाओं का उपयोग किया जाता है मातृभाषा और सीखने की दूसरी भाषा।
- ⊗ जब बालक अपनी मातृभाषा सीखता है उस वक्त कई प्रसंगों को समझ लेता है और दूसरी भाषा सीखते समय उसी भाषा में उन प्रसंगों का आश्रय करना पड़ता है।

अध्याय-6.

वर्तनी शिक्षण

- ⊗ पारंपरिक रूप से हम जिस प्रक्रिया या व्यवस्था द्वारा भाषा के ध्वन्यात्मक रूप को लिखित रूप देते हैं। उसे वर्तनी कहते हैं।
- ⊗ मानक उच्चारण में जो ध्वनियों का अनुक्रम होता है, उसी के अनुसार लिखित रूप में वर्णों और अक्षरों का क्रम नियोजन शुद्ध वर्तनी का मुख्य उद्देश्य होता है।
- ⊗ हिंदी वर्तनी का स्वरूप अक्षरात्मक है उसमें स्वरों वर्णों की लिपि संकेत तो होते हैं हैं उनकी मात्राएँ भी प्रयुक्त होती हैं।
- ⊗ हिंदी वर्तनी की अशुद्धियों के अनेक कारण हैं - उच्चारण भिन्नता से वर्तनीगत व्याघात (Interruption), चिह्नों में स्वरूपता का अभाव, लिपि का अपूर्ण ज्ञान, मात्राओं के प्रयोग में असावधानी शब्द स्थान और अर्थ भेद की अनभिज्ञता तथा सादृश्य आदि।
- ⊗ भाषा उच्चारण के अन्तर्गत वर्तनी सम्बन्धी श्रुतियों का निवारण वर्तनी का शुद्ध उच्चारण एवं लेखन अभ्यास करवाकर करना चाहिए।
- ⊗ वर्तनी ठीक कराने हेतु कक्षा में प्रिंट समृद्ध माडॉल का निर्माण करना चाहिए।

- ⊗ व्याकरण वि + आ + कृ + लुट् प्रत्यय के योग का योगफल है।
- ⊗ व्याकरण भाषा का शरीर विज्ञान है (डॉ० स्वीट्)
- ⊗ शुद्ध भाषा का प्रयोग एक कला है, कोरा किताबी ज्ञान नहीं।
- ⊗ भावों की व्यक्तता भाषा पर निर्भर है और भाषा की शुद्धता व्याकरण पर
- ⊗ भाषाविद् एवं व्याकरणवेत्ता व्यवहारिक व्याकरण के शिक्षण पर बल देते हैं।
- ⊗ प्राथमिक कक्षाओं में व्यवहारिक व्याकरण का ही प्रयोग कराया जाए, व्याकरणिक परिभाषाओं का परिचय न दिया जाए।

Arpita Nagar Etah
 व्याकरण के प्रकार
 9458415404, 9759481102

① औपचारिक व्याकरण तथा शास्त्रीय सैद्धांतिक व्याकरण :-

- ⊗ इसमें व्याकरण की एक पुस्तक होती है।
- ⊗ इसमें विद्वानों ने वाक्य संरचना, ध्वनि, स्वर आदि के व्याकरण के नियमों एवं सिद्धांतों की रचना की है।
- ⊗ व्याकरण के नियमों को विशेष महत्व दिया जाता है।
- ⊗ इसमें भाषा की शुद्धता का प्राथमिकता दी जाती है।

(2) **व्यवहारिक या अनौपचारिक व्याकरण :-** (Functional Grammar)

- ⊗ इस व्याकरण के स्वकल्प का विकास चॉम्सकी ने किया।
- ⊗ इसमें भाषा की शुद्धता की अपेक्षा सम्प्रयोग की बोधगम्यता का महत्व दिया जाता है।
- ⊗ घर, परिवार, समाज, अध्यापक आदि के व्यवहार से सीखा

(3) **प्रसांगिक व्याकरण :-**

- ⊗ भाषा (गद्य) की पुस्तक पहले समग्र उसके उदाहरणों की सहायता से व्याकरण के नियम निकलवाए जाते हैं।
- ⊗ व्याकरण की शिक्षा उल्लग कक्षांश में न देकर भाषा (गद्य) के कक्षांश में दे दी जाती है।
- ⊗ इस प्रकार की व्याकरण में शुद्ध स्पष्ट अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाता है।

व्याकरण शिक्षण विधि-

- निगमन विधि (Deductive method)
- आगमन विधि (Inductive method)
- समवाय प्रणाली (Correlation method)
- भाषा संसर्ग विधि (Language contact method)
- आगमन-निगमन/प्रयोग या विश्लेषण विधि

निगमन विधि / पुस्तक विधि / सूत्र विधि

⇒ निगमन विधि के शिक्षण सूत्र -

- ⊗ नियम से उदाहरण की ओर
- ⊗ सामान्य से विशिष्ट की ओर
- ⊗ अमूर्त से मूर्त की ओर
- ⊗ अज्ञात से ज्ञात की ओर

सूत्र विधि

- ⊗ इसमें व्याकरण के नियम, सूत्रों और उनके अर्थ तथा उदाहरण बतल जाते हैं।
- ⊗ इसमें प्रयोगात्मक पक्ष के स्थान पर सैद्धांतिक पक्ष पर बल दिया जाता है।
- ⊗ इसमें पुस्तक से व्याकरण के सभी नियम निकाल लिए जाते हैं।

9458415464 9750481102

आगमन विधि / समंवाय / प्रयोग विधि

⇒ आगमन के शिक्षण सूत्र -

- ⊗ उदाहरण से नियम की ओर
- ⊗ ज्ञात से अज्ञात की ओर
- ⊗ विशिष्ट से सामान्य की ओर
- ⊗ मूर्त से अमूर्त की ओर

प्रयोग विधि में उदाहरण देकर विद्यार्थियों से व्याकरण के नियम निकलवाए जाते हैं।

- ✓ इसमें विद्यार्थियों की व्याकरण की संरचनाओं का व्यवहारिक ज्ञान कराया जाता है।
- ✓ समंवाय विधि में गद्य या रचना पाठों के साथ व्याकरण के तत्वों का अध्ययन कराया जाता है।

भाषा संसर्ग विधि

- ⊗ बच्चों को ऐसे लेखकों की रचनाएँ पढ़ने को दी जाती हैं जिसका भाषा पर पूर्ण अधिकार हो। यदि सम्भव हो तो बच्चों को ऐसे लोगों के साथ वार्तालाप करने के अवसर भी दिए जाए।
- ⊗ प्राथमिक स्तर पर छात्रों को व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान देने के लिए यह विधि उपयोगी है। लेकिन व्याकरण का तार्किक ज्ञान कराने के लिए इस विधि की सहायता लेनी होगी।

⊗ साहित्य - पद्य और गद्य :-

- संस्कृत आचार्यों ने वाङ्मय को दो भागों में विभक्त किया था -
काव्य और शास्त्र
- काव्य भाव तत्व की प्रधानता होती है।
- शास्त्र में बुद्धि तत्व की प्रधानता होती है।
- कविता में विद्यार्थियों को अद्यात्मिक संतुष्टि मिलती है।
- उनकी सौन्दर्य भावना का विकास होता है। और सद्वृत्तियों का विकास होता है।
- कविता जीवन अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति है।
- प्रासंगिक विषयों को संक्षेप से संस्वर द्वारा सौन्दर्य से कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

गद्य	पद्य
* कहानी * नाटक / एकांकी * उपन्यास * संस्मरण * रेखाचित्र * रिपोर्टाज * यात्रा - वृतांत, डायरी	* कविता * छन्द * चौपाई * दोहा * पद * श्लोकी, सप्तदश

Note : हैंडो ने कविता को अव्यक्त कला कहा है।

- प्राथमिक स्तर पर कविता शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों में उचित प्रतिगति, लय, ताल, छाव-भाव के साथ कविता पाठ करने की क्षमता विकसित करना है।
- प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों का ध्यान नाद सौन्दर्य, चित्रात्मक सौन्दर्य और विचार सौन्दर्य की ओर आकृष्ट करना उचित है।
- उच्च प्राथमिक स्तर पर कविता में वर्णित भाव और भाषा सौन्दर्य की सराहना करने की क्षमता विकसित करना है।
- माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विश्लेषण की शक्ति विकसित हो जाती है।
- अध्यापक द्वारा कविता के आदर्श पाठ को ही शिक्षण का प्रथम सोपान माना जाता है।
- कविता का मुख्य गुण गेयता है अर्थात् उसे गाया जाता है।